ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
UGC APPROVAL NO. - 42652
CHETANA

Received on 25th Nov 2017, Revised on 30th Nov 2017, Accepted 05th Dec 2017

शोध पत्र

उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों की अनुसूचित जाति एवं जनजाति के शैक्षिक प्रशासकों की नेतृत्व शैली का तुलनात्मक अध्ययन

* डॉ मंजू पाराशर, प्राचार्य
श्री बालाजी टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज बेनाड़ रोड़, जयपुर (राजस्थान)
Email-sumit.manju@gmail.com, Mobile-9414322956

मुख्य शब्द : *अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, शैक्षिक प्रशासक, नेतृत्व आदि।*

सारांश

विश्व में मानव जाति के कल्याणार्थ अनेक व्यवस्थाएँ स्थापित हैं जिनमें शिक्षा व्यवस्था एक आधारभूत व्यवस्था के रूप में संचालित है और इस शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था के चार मूलभूत स्तम्भ हैं – शिक्षा, बालक, विद्यालय एवं शिक्षण। चूंकि यहाँ विद्यालय एक लघु प्रशासनिक संगठन की भूमिका का निर्वाह करता है जिसमें प्रमुख प्रधानाचार्य या प्रधानाध्यापक होते हैं जो कि शैक्षिक प्रशासक कहलाते हैं। किसी विद्यालय की सफलता प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में विद्यालयी नेता, अर्थात् शैक्षिक नेतृत्व की प्रशासनिक शैली पर निर्भर करती है। प्रस्तुत अध्ययन में उदयपुर संभाग के उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति एवं जनजाति के महिला एवं पुरूष शैक्षिक प्रशासकों की जनतांत्रिक, अधिकारिक, अहस्तक्षेपीय एवं मिश्रित नेतृत्व शैलियों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

प्रशासन – नेतृत्व सभी मानवकृत व्यवस्थाओं में पाये जाने वाला अनिवार्य पहलू है। अतः शैक्षिक क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। प्रत्येक राष्ट्र एवं समाज द्वारा जनहित के कार्यों के सफल सम्पादन हेतु विभिन्न प्रशासनिक इकाइयों का गठन किया जाता है इनमें से प्रत्येक इकाई के लिए निर्धारित कार्यों को सम्पन्न करने के लिए एक इकाई प्रमुख तथा सहायक नियुक्त किये जाते हैं, जिन्हें सम्बन्धित इकाई के कार्य निष्पादन का भार सौंपा जाता है। इकाई प्रमुख द्वारा किये जाने वाले कार्यों में उसकी व्यक्तिगत योग्यता, निपुणता एवं कार्य के प्रति निष्ठा का विशेष महत्व होता है और ये सब उसके द्वारा प्रयोग में लाई गई नेतृत्व शैली पर निर्भर करता है।

प्रशासन एक लम्बा एवं पूर्ण शब्द है, किन्तु इसका अर्थ बहुत सरल है अर्थात् लोगों की देखभाल करना तथा पारस्परिक सम्बन्धों की व्यवस्था करना। प्रशासन वह प्रवाहमय धारा है जो देश काल के सभी सम्भव तथा असम्भव परिवर्तनों को अपने आंचल में लपेट कर प्रवाहित होती रहती है, तथा प्रशासन वह स्थूल एवं संगठित व्यवस्था है जिसे फ्रांस जैसी भयानक क्रान्ति भी नहीं हिला सकी। अर्थात् नेपालियन नहीं रहा, परन्तु उसके प्रशासन सम्बन्धी सुधार बहुत समय तक चलते रहे। कुशल प्रशासन सरकार का वह आधार है जो राज्य को क्षत–विक्षत होने से बचाता है। वर्तमान में मुन नहीं परन्तु मनु संहिता आज भी जीवित

है। कौटिल्य व मेकयावली के क्रमश अर्थशास्त्र एवं प्रिंस को आज हम प्रशासन में महत्वपूर्ण स्थन के साथ देखते हैं।

प्रशासन एक व्यापक प्रक्रिया है जो निजि अथवा सार्वजनिक नागरिक अथवा सैनिक, छोटे या बड़े सभी समूहिक कार्यों के बारे में सभी के सम्बन्ध में लागू होती है। प्रशासन अंगेजी शब्द एडमिनिस्ट्रेशन की न्दिी रूपान्तरण है, इस शब्द की व्युत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द मिनिस्टर से हुई है, जिसका आशय दूसरों की सेवा में रत रहने वाला व्यक्ति से है। इस प्रकार प्रशासन का अर्थ अधिनस्थ लोगों की सेवा प्रभावशाली ढ़ंग से करने की कला।

शिक्षा प्रशसन के प्रारम्भ की दृष्टि से अमेरिका अग्रणी स्थान रखता है। यहाँ शिक्षा प्रशासन का श्री गणेश तब हुआ जब सभी क्षेत्राों में यह अनुभव किया जाने लगा कि बिना प्रशासनिक दक्षता के अधिकाधिक उत्पादन सम्भव नहीं है। अरस्तु ने आरम्भ में मनुष्य को मशीन की भांति काम में लेकर केवल उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया जिसके दुष्परिणाम कामगारों में असनतोष तथा उत्पादन की गुणवत्ता में गिरावट के रूप में समाने आया, अरस्तु ने शीघ्र ही यह स्वीकार किया कि अच्छे प्रशासन के लिए मानवीय सम्बन्ध आवश्यक है। मनुष्य मशीन नहीं वरन एक ऐसा प्रणी है, जिसमें संवेग, बुद्धि, सामाजिक भावना आदि है अर्थात् सर्वोपरी उसे आत्म संतुष्टि मिलना आवश्यक है। प्रशासनिक विचारों के इसी क्रम में एक ओर विचार आया कि न केवल मानवीय सम्बन्ध वरन् किसी संगठन के सफल संचालन के लिए सौहार्दपूर्ण सामाजिक उद्देश्य परायण पर्यावरण की भी आवश्यकता है। अतः हम उपयुक्त तीनों दृष्टिकाणों को इन्हें प्रतिपादित करने वाले निम्न तीन सम्प्रदायों को प्रशासन के क्षेत्र में देखते हैं। प्रथम (1910–35) उत्पादन कुलशता पर बल देने वाला, द्वितीय (1935–50) मानवीय सम्बन्धों पर बल देने वाला तथा तृतीय (1950–70) सामाजिक पर्यावरण पर बल देने वाला सम्प्रदाय।

वर्तमान शिक्षा प्रशासन का सम्प्रत्यय लगभग 100 वर्ष पुराना हैं इसमें दो पक्षों – भौतिक संसाधनों व मानवीय संसाधनों पर विशेष बल दिया जाता है। शिक्षा जगत में विद्यालयों के प्रशासन के लिए मानवीय संसाधनों में बालक, शिक्षक, व्यवस्थापिका, अभिभावक, लिपिक वर्ग, स्थानीय समुदाय व शिक्षा बोर्ड आदि के व्यक्ति आते हैं। जबकि भौतिक संसाधन में धन, भवन खेल का मेदान, उपकरण तथा प्रयोगशालाएँ आती हैं। उपयुक्त संसाधनों का लक्ष्यों के अनुरूप पाठ्यक्रम, पाठन विधियों, नियम, मूल्यांकन व पर्यवेक्षण आदि के लिए नियोजित करना होता है, जिससे कि निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

शिक्षा प्रशासन के तत्वों को हम शैक्षिक प्रशासन की क्रियाओं के संचालन का अवलोकन करने पर जैसे योजना, निर्देशन, क्रियान्वयन, नियंत्रण एवं मूल्यांकन के रूप में देख सकते हैं।

लूथर गुलिक ने एक अच्छे प्रशासक बनने के लिए प्रशासन के सिद्धान्त बताये हैं जिन्हें पोस्डकॉर्ब (POSDCORB) की संज्ञा प्रदान की गई है। P-Planning (नियोजन), O-Organization (संगठन), S-Staffing (कार्मिक व्यवस्था), D-Direction (निर्देशन), Co-ordination (समन्वय), R-Reporting (प्रतिवेदन) एवं B-Budgeting (आय–व्यय विवरण)।

लूथर गुलिक के अनुसार यदि इन पक्षों की जानकारी प्रशासक को या प्रबन्धक को होती है तो वह प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ व सफल बनाने में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है। शिक्षा प्रशासन के तत्वों में महत्वपूर्ण स्थान शैक्षिक प्रशासक का होता है, और विद्यालय में प्रशासक प्रधानाध्यापक/प्रधानाचार्य होते हैं।

व्यक्ति द्वारा स्थापित प्रत्येक प्रकार की व्यवस्थाओं जैसे राजनैतिक, आर्थिक, औद्योगिक, चिकित्सा, व्यापार, सेना तथा शिक्षा आदि में नेतृत्व का अपना सम्पूर्णता के साथ महत्व है। चंकि हर व्यक्ति की कार्यशैली अलग–अलग होती है। जिसके अन्तर्गत हम नेतृत्व को भी अलग–अलग क्षेत्राों में अलग–अलग प्रशासकों के साथ उसके आचरण के रूप में देखते हैं, तथा नेतृतव के इस आचरण में व्यावहारिक दृष्टि से भिन्नता पायी जाती है, तथा नेतृत्व में इस आचरणीय परिवर्तन के आधार पर प्रशासन में इसे नेतृत्व शैलियों के रूप में देखा जाता है। प्रमुख शैलियाँ–आधिकारिक नेतृत्व शैली, जनतांत्रिक शैली, अहस्तक्षेपयी शैली, मिश्रिम शैली हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं उपयोगिता

नेतृत्व एक सार्वभौमिक एवं व्यापक धारणा है। नेतृत्व का सीधा सम्बन्ध नेता से होता है और नेता उस व्यक्ति को कहा जाता है जो अपनी योग्यता, बुद्धि, प्रतिभा एवं शक्ति के आधार पर अन्य व्यक्तियों को प्रभावित तथा निर्देशित करता है, तथा सामुहिक जीवन को समय विशेष पर नियोजित, नियंत्रित, संशोधित, परिवर्तित एवं पथ प्रदर्शित करता है। प्रत्येक क्षेत्र में अपना–अपना एक नेता होता है और विद्यालयी संस्थितयों में प्रधानाध्यापक/ प्रधानाध्यापिका एक नेता होता है। विद्यालय की समस्त गतिविधियाँ उसी पर आधारित होती हैं। अतः यह समाज एवं राष्ट्र की महत्वपूर्ण आवश्यकता है कि विद्यालय प्रशसक सुयोग्य हो ताकि राष्ट्र के भावी नागरिकों का अपेक्षित निर्माण कुशल नेतृत्व हो। विद्यालय प्रशासक से यह अपेक्षा की जाती है कि उसे प्रशासनिक शैलियों का ज्ञान हो तथा उस प्रशासनिक शैली को अपनाएँ जिससे संगठन व समूह की अपेक्षाओं को पूरा किया जा सके। प्रधानाध्याक के रूप में प्रशासनिक साहित्य अध्ययन के बाद वह स्वयं की भी एक ऐसी प्रशासनिक शैली विकसित कर सकता है जिस पर चलकर विद्यालय के विकास की गति को पथोचित दिशा प्रदान कर सकता है।

विद्यालय में सभी कार्यों से सम्बद्ध विभिन्न स्तरों पर चलने वाली गतिविधियों के कुशल संचालन में प्रधानाध्याक के प्रशासनिक शैली की प्रभावकारी भूमिका होती है। उसी के कुशल निर्देशन व रूचि के फलस्वरूप विद्यालय में चलने वाली पाठ्येत्तर गतिविधियाँ भी समयबद्ध आधार पर कुलशलता पूर्वक संचलित होती है। प्रधानाध्यापक की प्रशासनिक गुणों एवं नेतृत्व शैलियों के व्यावहारिक स्वरूप के महत्व को पहले से ही महसूस किया जाता रहा है। जैसा कि हमें भारत एवं विदेशों में हुए विभिन्न अध्यनों से ज्ञात होता है। चार्ल्स वर्थ (1940), आर.एम. स्टोगडिल (1949), राबिन कॉसलो (1889), एडवर्ड (1992), आरनॉल्ड पी.के. (1995), योग यी योन (2000), डिलोन, रोबर्ट वायने (2003), गोरोजिडिल, जी और पपाइयोनाऊ ए. (2011), डेबोस, सी. (2012), हरेरा रॉबर्ट (2012) आदि ने विदेशों में प्रधानाध्यापक के प्रशासनिक शैलियों, गुणों एवं व्यवहार को आधार बनाकर अध्ययन किया। इसी प्रकार भारत में भी प्रधानाध्यापक के प्रशासनिक गुणों व शैलियों से सम्बन्धित अध्ययन हुए हैं। एम. पी. कौशिक (1979), पी. सी. कुमार (1980), जी.डी. नायक (1982), पाण्डे सरोज (1985), नसरीन ए.

(1988), रामावत रेणुका (2010), सलीम टी. मोहम्मद (2011), बसु, मदसिर जान (2012), मल्होत्रा, मोना (2012), दुबे सुशील (2013), शेखावत दशरथ सिंह (2013), पारीख विश्वलाल (2015) आदि ने अध्ययन किया।

नेतृत्व समाज में एक महत्वपूर्ण सार्वभौतिक एवं व्यापक धारणा के साथ अवस्थित है। इसके द्वारा समाज के किसी भी क्षेत्र में परिवर्तन लाया जा सकता है। वर्तमान समय में विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों एवं प्रधानाचार्यों पर यह गम्भीर दायित्व है कि वे अपने प्रशासनिक गुणों का भली–भांति उपयोग करे क्योंकि प्रधानाध्यापकों व प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक गुण व नेतृत्व शैलियों का सीधा सम्बन्ध विद्यालयों में प्रशासनिक कार्य, व्यवहार व शैक्षिक वातावरण को प्रभावित करता है।

जाति व्यवस्था भारतीय समाज की न केवल वर्तमान में बल्कि प्रारम्भ से ही मूलभूत पहचान रही है। जिसके आधार पर आज हमारे सामने जातिवाद, साम्प्रदायिकता, आरक्षण, वर्ग संघर्ष जैसी अनेक समस्याएँ समाज में व्याप्त है जिनके समाधान हेतु निरन्तर प्रयास किये जाते रहे हैं। इन्हीं प्रयासों के क्रम में समाज की अधकाधिक रूप से शिक्षित करना भी शामिल है। एक सुशिक्षित व्यक्ति चाहे किसी भी क्षेत्रा में कार्यरत हो वह स्वविवेकानुसार अच्छे बुरे की पहचार कर संकीर्ण विचारों से ऊपर उठकर कार्य करता है व समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने में भागीदार बने रहना चाहता है। अतः आज इस संदर्भ में शोध अध्ययन की आवश्यकता है कि जिस प्रकार देश में शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है, उसी क्रम में देश की व्यापक समस्याओं का समाधान भी हो रहा है या नहीं।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रशासनिक शैलियों एवं वर्ग को आधार मानते हुए अनुसूचित जाति एवं जनजाति के शैक्षिक प्रशासकों नेतृत्व शैली को अध्ययन का आधार बनाया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उदयपुर संभाग के उच्च माध्यमिक व माध्यमिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के शैक्षिक प्रशासकों की जनतांत्रिक नेतृत्व शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उदयपुर संभाग के उच्च माध्यमिक व माध्यमिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के शैक्षिक प्रशासकों की अधिकारिक नेतृत्व शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उदयपुर संभाग के उच्च माध्यमिक व माध्यमिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के शैक्षिक प्रशासकों की अहस्तक्षेपीय नेतृत्व शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. उदयपुर संभाग के उच्च माध्यमिक व माध्यमिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के शैक्षिक प्रशासकों की मिश्रित नेतृत्व शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

1. उदयपुर संभाग के उच्च माध्यमिक व माध्यमिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के महिला एवं पुरूष शैक्षिक प्रशासकों की जनतांत्रिक नेतृत्व शैली में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
2. उदयपुर संभाग के उच्च माध्यमिक व माध्यमिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के महिला एवं पुरूष शैक्षिक प्रशासकों की अधिकारिक नेतृत्व शैली में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

3. उदयपुर संभाग के उच्च माध्यमिक व माध्यमिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के महिला एवं पुरूष शैक्षिक प्रशासकों की अहस्तक्षेपीय नेतृत्व शैली में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
4. उदयपुर संभाग के उच्च माध्यमिक व माध्यमिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के महिला एवं पुरूष शैक्षिक प्रशासकों की मिश्रित नेतृत्व शैली में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

न्यादर्श एवं जनसंख्या

शोध हेतु उदयपुर संभाग का चयन गुच्छ न्यादर्श के आधार पर किया गया है, तथा स्तरीय न्यादर्श के द्वारा विद्यालयों तथा सौद्देश्य न्यादर्श द्वारा महिला एवं पुरूष शैक्षिक प्रशासकों का चयन किया गया। अध्ययन के लिए उदयपुर संभाग के सरकारी व गैर–सरकारी माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों से 250 महिला एवं पुरूष शैक्षिक प्रशासकों को चुना गया जिसमें 125 अनुसूचित जाति एवं 125 अनुसूचित जनजाति वर्ग के हैं।

चूंकि उदयपुर संभाग में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के संस्था प्रधानों की संख्या पर्याप्त नहीं होने के कारण अध्ययन के न्यायदर्श का 20 प्रतिशत भाग जयपुर जिले से लेकर शोधकार्य की सम्पूर्ति की गई है। अर्थात् दोनों ही वर्गों के 80 प्रतिशत संस्था प्रधान उदयपुर संभाग से एवं 20 प्रतिशत संस्था प्रधान जयपुर जिले से लिये गये हैं। दोनों ही वर्गों में समानता रखते हुए 80 प्रतिशत भाग सरकारी एवं 20 प्रतिशत भाग गैर–सरकारी विद्यालयों से लिया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत शोध में उपकरण के रूप में स्वर्निमित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकी– माध्य, मानक विचलन, सह–सम्बन्ध, टी–मान एवं क्रांतिक मान का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों का विश्लेषण उदयपुर संभाग के उच्च माध्यमिक व माध्यमिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के शैक्षिक प्रशासकों की विभिन्न नेतृत्व शैलियों से सम्बन्धित अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.सं.	विकल्प एवं वर्ग नेतृत्व शैलियाँ	हाँ		कभी–कभी		नहीं	
		अ.जा	अ.जजा.	अ.जा	अ.जजा.	अ.जा	अ.जजा.
1	जनतांत्रिक नेतृत्व शैली	93.3	90.8	05.1	07.2	1.6	2.6
2	अधिकारिक नेतृत्व शैली	71.6	67.8	16.9	17.5	11.6	14.7
3	अहस्तक्षेपीय नेतृत्व शैली	64.9	64.0	22.2	21.7	12.9	14.3
4	मिश्रित नेतृत्व शैली	82.5	80.6	10.8	12.7	6.7	06.7

सारणी के प्रथम बिन्दु में प्राप्त अभिवृत्ति के प्रतिशत को देखने पर ज्ञात होता है कि दोनों ही वर्गों के संस्था प्रधानों द्वारा हाँ विकल्प पर प्रकट क्रमशः 93.3 व 90.8 प्रतिशत अभिवृत्ति के आधार पर कहा जा सकता है कि सम्बन्धित क्षेत्र के दोनों चयनित वर्गों के लगभग 90 प्रतिशत महिला व पुरूष शैक्षिक प्रशासक जनतांत्रिक नेतृत्व शैली के प्रति समान व सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

सारणी के द्वितीय बिन्दु में दोनों ही वर्गों के संस्था प्रधानों द्वारा हाँ विकल्प पर प्रकट क्रमशः 71.6 व 67.8 प्रतिशत अभिवृत्ति के आधार पर स्पष्ट होता है कि चयनित क्षेत्र के दोनों वर्गों के लगभग 70 प्रतिशत महिला व पुरूष शैक्षिक प्रशासक अधिकारिक नेतृत्व शैली के प्रति समान व सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

सारणी के तृतीय बिन्दु में दोनों ही वर्गों के संस्था प्रधानों द्वारा हाँ विकल्प पर प्रकट क्रमशः 64.9 व 64.0 प्रतिशत अभिवृत्ति के आधार पर स्पष्ट होत है कि चयनित क्षेत्र के दोनों वर्गों के लगभग 64 प्रतिशत महिला व पुरूष शैक्षिक प्रशासक अहस्तक्षेपीय नेतृत्व शैली के प्रति समान व सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

सारणी के तृतीय बिन्दु में दोनों ही वर्गों के संस्था प्रधानों द्वारा हाँ विकल्प पर प्रकट क्रमशः 82.5 व 80.6 प्रतिशत अभिवृत्ति के आधार पर स्पष्ट होत है कि चयनित क्षेत्र के दोनों वर्गों के लगभग 80 प्रतिशत महिला व पुरूष शैक्षिक प्रशासक मिश्रित नेतृत्व शैली के प्रति समान व सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

परिकल्पनाओं का सत्यापन

प्रयुक्त परिकल्पनाओं की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात (C.R.) का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना 1 उदयपुर संभाग के उच्च माध्यमिक व माध्यमिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के महिला एवं पुरूष शैक्षिक प्रशासकों की जनतांत्रिक नेतृत्व शैली में सार्थक अन्तर सम्बन्धी सारणी –

महिला पुरूष शैक्षिक प्रशासक	N	Σ	Σ			C.R.
अनुसूचित जाति	125	3445	6711	27.56	7.32	0.13
अनुसूचित जनजाति	125	3431	6608	27.44	7.27	

सारणी से स्पष्ट होता है कि सांख्यिकीय गणना से प्राप्त C.R. मान 0.13 सार्थकता स्तर 0.05 पर प्राप्त मूल्य 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि उदयपुर संभाग के अनुसूचित जाति एवं जनजाति के महिला व पुरूष शैक्षिक प्रशासकों की जनतांत्रिक शैली में पर्याप्त सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना 2 उदयपुर संभाग के उच्च माध्यमिक व माध्यमिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के महिला एवं पुरूष शैक्षिक प्रशासकों की अधिकारिक नेतृत्व शैली में सार्थक अन्तर से सम्बन्धी सारणी –

महिला पुरूष शैक्षिक प्रशासक	N	Σ	Σ			C.R.
अनुसूचित जाति	125	3099	5606	24.79	6.69	1.07
अनुसूचित जनजाति	125	2988	5362	23.90	6.54	

सारणी से स्पष्ट होता है कि सांख्यिकीय गणना से प्राप्त C.R. मान 1.07 सार्थकता स्तर 0.05 पर प्राप्त मूल्य 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि उदयपुर संभाग के अनुसूचित जाति एवं जनजाति के महिला व पुरूष शैक्षिक प्रशासकों की अधिकारिक नेतृत्व शैली में पर्याप्त सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना 3 उदयपुर संभाग के उच्च माध्यमिक व माध्यमिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के महिला एवं पुरूष शैक्षिक प्रशासकों की अहस्तक्षेपीय नेतृत्व शैली में सार्थक अन्तर से सम्बन्धी सारणी –

महिला पुरूष शैक्षिक प्रशासक	N	Σ	Σ			C.R.
अनुसूचित जाति	125	3050	5321	24.40	6.52	0.74
अनुसूचित जनजाति	125	3000	5240	24.00	6.47	

सारणी से स्पष्ट होता है कि सांख्यिकीय गणना से प्राप्त C.R. मान 0.74 सार्थकता स्तर 0.05 पर प्राप्त मूल्य 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि उदयपुर संभाग के अनुसूचित जाति एवं जनजाति के महिला व पुरूष शैक्षिक प्रशासकों की अहस्तक्षेपीय नेतृत्व शैली में पर्याप्त सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना 4 उदयपुर संभाग के उच्च माध्यमिक व माध्यमिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के महिला एवं पुरूष शैक्षिक प्रशासकों की मिश्रित नेतृत्व शैली में सार्थक अन्तर से सम्बन्धी सारणी –

महिला पुरूष शैक्षिक प्रशासक	N	Σ	Σ			C.R.
अनुसूचित जाति	125	3265	6151	26.12	7.01	0.00
अनुसूचित जनजाति	125	3266	6086	26.12	6.97	

सारणी से स्पष्ट होता है कि सांख्यिकीय गणना से प्राप्त C.R. मान 0.00 सार्थकता स्तर 0.05 पर प्राप्त मूल्य 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि उदयपुर संभाग के अनुसूचित जाति एवं जनजाति के महिला व पुरूष शैक्षिक प्रशासकों की मिश्रित नेतृत्व शैली में पर्याप्त सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

निष्कर्ष

शोध अध्ययन से ज्ञात होता है कि अनुसूचित जाति एवं जनजाति के महिला एवं पुरूष शैक्षिक प्रशासकों की प्रशासनिक शैलियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, तथा दोनों ही वर्गों के शैक्षिक प्रशासक जनतांत्रिक नेतृत्व शैली के प्रति उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

- आस्थाना, विपिन एवं हकीम एम.ए., ''मनोविज्ञान शोध विधियाँ'', आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर, 1977.
- आत्रेय, एस.पी., ''नोविज्ञान में सांख्यिकी'', वाराणसी, तारा पब्लिकेशन, 1974.
- अग्रवाल, राम नारायण एवं आस्थाना विपिन; ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन'', आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर, 1996.
- भार्गव, महेश, ''आधुनिक मनोवैज्ञानिक और परीक्षण एवं मापन'', आगरा, शैक्षक प्रकाशन, 1992.
- गैरिट, हेनरी ई.; ''शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग'', लुधियाना, कल्याणी पब्लिशर्स, 1972.
- गिलफर्ड, जे.पी.; ''साइकोमैट्रिक मैथड्स'', न्यू देहली, टाटा मैकग्रॉहिल पब्लिशिंक कम्पनी, 1954.
- कॉफमेन जोसफ एफ.; ''एनसाइक्लोपीडिया ऑफ एज्यूकेशन'', 1971.
- कर्टर, बी. गुड; ''डिक्शनरी ऑफ एज्यूकेशन'', मैग्रॉहिल कम्पनी, न्यूयॉर्क, 1973.
- शर्मा, आर.ए.; ''शिक्षा अनुसंधान'', सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ, 1998.
- सुखिया, एस.पी.; ''विद्यालय प्रशासन, संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
- स्केटस् गुड बार; ''मैथडलोजी ऑफ एज्यूकेशन रिसर्च'', एप्लीटन सैंचुरी, न्यूयॉर्क, 1974.
- तिवारी चन्दा; ''मानव, मूल्याँकन एवं प्रश्न–पत्र संरचना'', जैन प्रकाशन पुस्तक मन्दिर, जयपुर, 2001.
- वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव, डी.एन. ; ''मनोविज्ञान तथा शिक्षा में सांख्यिकी'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1971.

- वर्मा, जे.पी.; ''शैक्षिक प्रबन्धन'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2007.

सर्वे

- बुच, एम.बी.; ''थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन'', एन.सी.ई.आर.टी., न्यू देहली, 1978–1983.
- बुच, एम.बी.; ''फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन'', एन.सी.ई.आर.टी., न्यू देहली, 1983–1988.
- बुच, एम.बी.; ''फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन'', एन.सी.ई.आर.टी., न्यू देहली, 1988–199

पत्र–पत्रिकाएँ

- इन्टरडिसिप्लिनरी जर्नल ऑफ कान्टेम्पररी रिसर्च इन बिजनस'', खेबर, पखतुनिस्थान (पाकिस्तान), मई, 2011, वॉल्यूम–3.
- ''इन्टरनेशनल रेफर्ड रिसर्च जर्नल'', हुबली (कर्नाटक), नवम्बर, 2011, ISSN-0975-3486 RNI Raj. bil 2009/30097, Vol. III, issue 26.
- देमेतरा बैतैले, तारा कोल ग्रिडेख, सुषमा लोएब (2009), ''प्रभावशाली विद्यालय : उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षकों का प्रबन्धन एवं नियुक्ति, विकास एवं संगठन'' CALDER कार्यपत्र 37, वाशिंगटन डी.सी. शहरी संस्थान।
- मयानी, जे.पी. (1989). ए स्टडी ऑफ हिस्टॉरीकल डेवलपमेन्ट ऑफ प्री प्राइमरी एज्यूकेशन इन गुजरात, पीएच.डी. (एज्यूकेशन), भावनगर यूनिवर्सिटी, भावनगर.
- मेहता, अरूण सी. (2001). साक्षरता पर प्राथमिक शिक्षा का प्रभाव, जनगणना–2001 के प्रारम्भिक आँकड़ों का विश्लेषण, परिप्रेक्ष्य शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक–आर्थिक सन्दर्भ, वर्ष–8, अंक 1–2, नीपा, नई दिल्ली.
- मैखुरी, रमा (2005). स्टेट्स ऑफ एलीमेन्ट्री एज्यूकेशन इन रूरल एरिया ऑफ चमौली डिस्ट्रिक्ट ऑफ उत्तरांचल, इंडियन एज्यूकेशनल एब्सट्रेक्ट्स (प्राइमरी एज्यूकेशन), एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, वो. 8 नं.–1, जनवरी 2008, 35–36.
- मिनिस्ट्री ऑफ ह्यूमन रिसोर्स डवलमेन्ट (1993). एजूकेशनल फॉर ऑलः द इण्डियन सीन, सेकेण्ड एडिशन, गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया, मिनिस्ट्री ऑफ ह्यूमन रिसोर्स डवलमेन्ट, डिपार्टमेन्ट ऑफ एजूकेशन, न्यू देहली.
- एन.सी.ई.आर.टी. (1998). सिक्स्थ आल इंडिया एज्यूकेशनल सर्वे (1993–94), एन.सी.ई.आर.टी., न्यू देल्ही.
- एन.सी.ई.आर.टी. (2005). सेवंथ आल इंडिया एज्यूकेशनल सर्वे, प्रोविसिओनल स्टेटिस्टिक्स एज ओन सितम्बर 30, 2002. एन.सी.ई.आर.टी., न्यू देहली.
- एन.सी.ई.आर.टी. (2006). नेशनल फोकस ग्रुप ओन अर्ली चाइल्डहुड एज्यूकेशन, पोजीशन पेपर, एन.सी.ई. आर.टी., न्यू देल्ही.
- नंदा, रेणु (2006). कंसर्न अबाऊट प्राइमरी एज्यूकेशन इन रूरल एरिया : एन इन डेप्थ स्टडी ऑफ राजौरी डिस्ट्रिक्ट (जम्मू एण्ड कश्मीर स्टेट), इंडियन एज्यूकेशनल एब्सट्रेक्ट्स (प्राइमरी एज्यूकेशन), एन. सी.ई.आर.टी, नई देल्ही., वो. 34 नं.–4, फरवरी.
- न्यूपा (2006–07). डिस्ट्रिक्ट रिपोर्ट कार्ड, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ एजूकेशनल प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, न्यूदेहली.
- न्यूपा (2007). एज्यूकेशन इन इंडिया अट अ ग्लांस, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ एज्यूकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन, न्यू देल्ही.
- पाल, एस. पी. एंड पंत, डी. के. (1995). स्ट्रेटेजीज टू इम्प्रूव स्कूल एनरोलमेंट रेट इन इंडिया, जर्नल ऑफ़ एज्यूकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन, 9 (2) 169–171.

- पाराशर, दीपशिखा (2011). राजस्थान राज्य में सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत बालिका शिक्षा हेतु किए जाने वाले प्रयास : एक प्रवृत्यात्मक अध्ययन (2005–2010) अप्रकाशित शोध अध्ययन (पीएच.डी), शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली.
- प्रधान, जी.सी. (2009). ए स्टडी ऑन ग्रोथ एण्ड प्रजेन्ट स्टेटस ऑफ एलीमेन्टरी एज्यूकेशन इन गोवा, जर्नल ऑफ इंडियन एज्यूकेशन, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली, 34, (4), फरवरी, 90–112.
- प्रकाश, एस. (1996). भारत में प्रारम्भिक शिक्षा का सार्वजनीनकरण, समस्यायें और संभावनायें, परिप्रेक्ष्य – शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक–आर्थिक संदर्भ, नीपा, नई दिल्ली, 3 (2).
- राल्ते, ललियनी (1990). एन एनालाइटिकल स्टडी ऑफ द प्राइमरी एज्यूकेशन इन मिजोरम ड्यूरिंग द पोस्ट–इंडेपेन्डेन्स पीरियड, पीएच.डी.(एज्यूकेशन), डिपार्टमेन्ट ऑफ एज्यूकेशन नार्थ–इस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी शिलॉंग–(मेघालय).
- सक्सेना, कृष्णा (2012). राजस्थान में माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक विकास की प्रवृत्ति (1986–2008) का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध (पीएच.डी.), वनस्थली विद्यापीठ.
- शर्मा, अनुसूया (2010). कोटा संभाग में पारम्परिक संस्कृत शिक्षा के विकास (1990 से 2008–09) का अध्ययन, अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबन्ध, वनस्थली विद्यापीठ.
- सिंह, मोनिका (2009). अ स्टडी ऑफ डेवलपमेन्ट ऑफ सैकेण्डरी एज्यूकेशन इन केरल एण्ड उत्तरप्रदेश यूजिंग एज्यूकेशन डेवलपमेन्ट इन्डेक्स, एम.फिल. डिजर्टेशन, न्यूपा, न्यू दिल्ली.
- शर्मा एस. पी. (1978). अ स्टडी ऑफ डवलपमेंट ऑफ प्राइमरी एज्यूकेशन इन देहली (1913–1968), अनपब्लिश्ड पीएच.डी. (एज्यूकेशन), कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी, कुरूक्षेत्र.
- सिंह, जे.पी. (2002). पूर्वोत्तर भारत में विद्यालय शिक्षा का प्रवाह और सम्भावनाएँ, जर्नल ऑफ इंडियन एज्यूकेशन, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली, फरवरी 2003, वो. 28 नं. 4.
- सिन्हा, ए. एण्ड सिन्हा, ए.के. (1995). प्राइमरी स्कूलिंग इन नार्थ इंडिया : अ फील्ड इन्वेस्टीगेशन, सेंटर फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट, लाल बहादुर शास्त्री नेशनल अकादमी ऑफ़ एडमिनिस्ट्रेशन, मसूरी.
- स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ एजूकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग, सिक्सथ ऑल इण्डिया एजूकेशनल सर्वे स्टेट रिपोर्ट (राजस्थान), स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ एजूकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग, उदयपुर, राजस्थान.
- सुराणा, अजय (2003). राजस्थान के एक जिले में शैक्षिण विकास का पार्श्व चित्र 1981–2000, एक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध (पीएच.डी.), वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली (राज.).
- त्रिपाठी, आर.एस. (1992). ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ डेवलपमेन्ट ऑफ हायर एज्यूकेशन इन उत्तर प्रदेश, सिन्स इन्डेपेन्डेन्स, अनपब्लिश्ड पीएच.डी. (एज्यूकेशन), कानपुर यूनिवर्सिटी.

*** Corresponding Author**

डॉ मंजू पाराशर, प्राचार्य

श्री बालाजी टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज बेनाड़ रोड़, जयपुर (राजस्थान)

Email-sumit.manju@gmail.com, Mobile-9414322956